मुट्ठी भर धूप

लालजी वर्मा

मुट्ठी भर धूप

त्रिपथगा
प्रकाशन • मुद्रण • चित्रण

मुट्ठी भर धूप

लालजी वर्मा

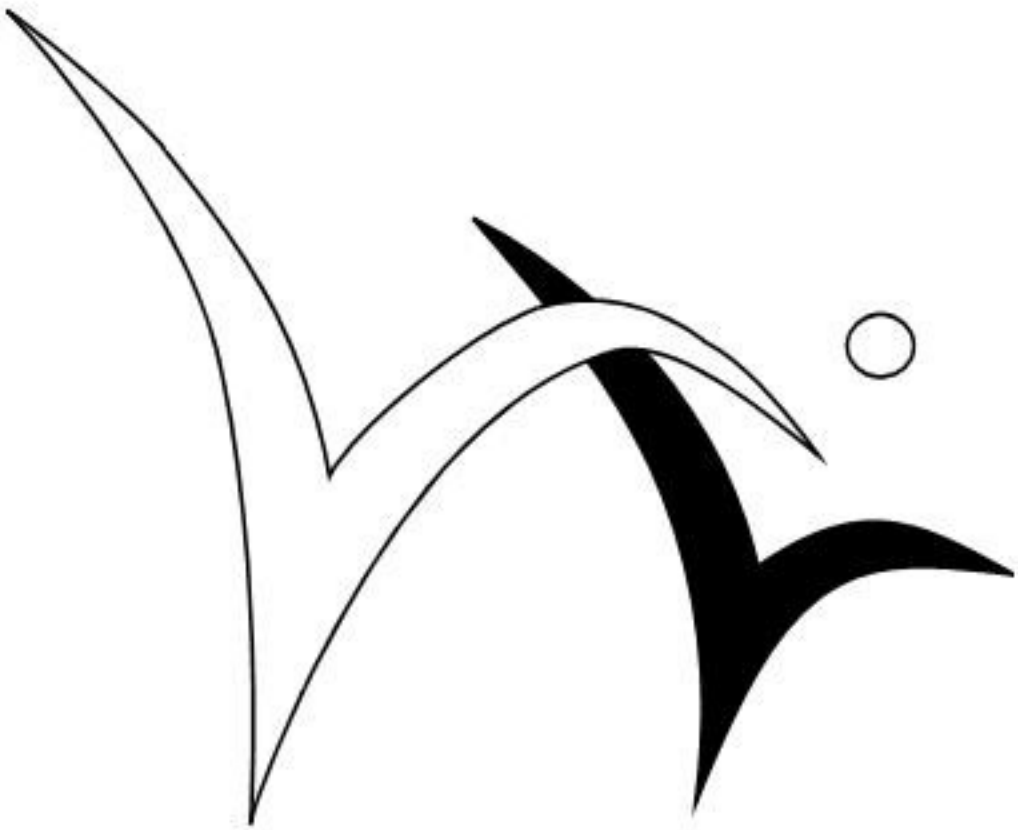

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित

प्रथम संस्करण : १९९७

© पूर्ण स्वत्वाधिकारी : लालजी वर्मा

रूप सज्जा : नंदिता

कम्प्यूटर टाइपसेटिंग :
वर्णिका, दिल्ली

MUTTHI BHAR DHOOP a collection of poems by Lalji Verma.

मातृ
स्मृति
में

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय	९
आमुख	११
१. छाप दिखती है तुम्हारी	१५
२. स्वप्न-बिम्ब	१८
३. तेरा मेरा सम्बन्ध यही	२१
४. सूर्य का रथ रोक लो रे	२५
५. नीलकमल	२७
६. क्षितिज के पार	२९
७. मेरी आखिरी कब्र	३१
८. असंभव	३५
९. उठो बापू	३७
१०. काला तारा	३९
११. आशा	४१
१२. अतीत के सितार पर	४८
१३. रेत की आँधी	५१
१४. धर्मग्रन्थ खो गया	५३
१५. सेतु-बाँध	५५
१६. त्रिशंकु-सा	५७
१७. दृश्य-अदृश्य	६०
१८. कुकुरमुत्ता	६३
१९. पंक्तियाँ दो, एक कविता	६६
२०. चाँद रोता रहा	६९

२१. रणभूमि में जाने दो ७३
२२. मुट्ठी भर धूप ७५
२३. मुझमें हुँकार भर दो ७७
२४. कल का सूरज ७९
२५. किस पर लिखूँ कहानी अपनी ८३
२६. उत्कंठा ८५
२७. झील का ठूँठ और रेत का टीला ९०
२८. एक तरुण, असंख्य लहरें ९३
२९. शुष्कः काष्ठः तिष्ठति अग्रे ९५
३०. दीप-शिखा को बुझ जाने दो ९७
३१. प्रतीक्षा करो १००
३२. नीला आकाश १०३
३३. एक पहर रात १०६
३४. बिखरते चित्र १०९
३५. किंचित् ११२
३६. शान्त हो रे जीवन-उन्माद ११५
३७. अगर सुना सको तो ११७

प्रकाशकीय

गत वर्ष फरवरी में नयी दिल्ली में आयोजित बारहवें विश्व पुस्तक मेले में 'त्रिपथगा' के स्टॉल में (महज उत्सुकतावश !) पधारनेवाले पुस्तक-प्रेमियों, कवियों और लेखकों में प्रेमचंद-स्मृति पुरस्कार से सम्मानित कवि लालजी वर्मा भी थे । वर्मा जी ने त्रिपथगा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को देखकर मेला समाप्त होते ही हमसे संपर्क साधा – अपने ताजा कविता संग्रह के प्रकाशन के लिए ।

पहली नजर में ही *मुट्ठी भर धूप* देखकर हमने इसे यथासमय प्रकाशित करने का मन बना लिया । यह अलग बात है कि हम अपने सम्पादकों की तीखी नजर और पैनी कलम से कृति के गुजर चुकने के बाद ही प्रकाशन-सम्बन्धी अन्तिम निर्णय ले पाये । अस्तु, हिन्दी कविता के प्रबुद्ध पाठकों तक इस कृति को पहुँचाने में थोड़ा समय लगना स्वाभाविक है । फिर त्रिपथगा ने विगत एक वर्ष की अल्प अवधि में हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में उत्कृष्ट साहित्य के चयन एवं उसके स्तरीय प्रकाशन की जिस परम्परा की शुरुआत की है, उसे कायम रखने का भरपूर प्रयास जारी है । सत्साहित्य का प्रकाशन हमने अपना धर्म और कर्म माना है । इसमें व्यावसायिकता का प्रवेश हमें मंजूर नहीं है । यह जानते हुए भी कि प्रकाशन आज 'मिशन' न रहकर मात्र एक बाजारू

कार्यकलाप (कमर्शियल एक्टिविटी) बन गया है और अन्य उपभोक्ता सामग्रियों की तरह पुस्तकें भी अब बाजार में रखी जाने लगी हैं, एक अज्ञातनाम दिवंगत लेखक त्रिवेणी प्रसाद की कृतियों को लेकर त्रिपथगा का अवतरण हुआ ।

फिर नयी पीढ़ी के एक सशक्त हस्ताक्षर अमरेन्द्र नारायण की *सिर्फ एक लालटेन जलती है* को पाठकों के समक्ष रखने के बाद आज हम जाने-माने कवि-नाटककार लालजी वर्मा को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं ।